थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://thati.net/

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी की भूमिका

डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार, हरियाणा

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का नाम अत्यधिक सम्मान के साथ लिया जाता है। गांधी जी ने अपने अद्वितीय अहिंसात्मक दृष्टिकोण और सत्याग्रह के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। इस शोध पत्र में हम गांधी जी की भूमिका, उनकी विचारधारा, और उनके प्रमुख आंदोलनों का विश्लेषण करेंगे, जिन्होंने भारत को स्वतंत्रता की ओर अग्रसर किया।

गांधी जी का जीवन परिचय

प्रारंभिक जीवन

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। वे अपनी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर और राजकोट में प्राप्त की और आगे की शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए जहाँ उन्होंने कानून की पढ़ाई की।

दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष

गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका का अनुभव उनकी विचारधारा और संघर्ष की नींव बना। यहाँ उन्होंने नस्लीय भेदभाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी और सत्याग्रह की अवधारणा विकसित की। दक्षिण अफ्रीका में उनके संघर्ष ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए तैयार किया।

स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी की भूमिका

चंपारण सत्याग्रह (1917)

गांधी जी ने बिहार के चंपारण में नील किसानों की समस्याओं को उजागर किया और उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ी। यह उनका पहला बड़ा सत्याग्रह आंदोलन था, जिसने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख नेता के रूप में स्थापित किया।

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://thati.net/

खेड़ा सत्याग्रह में गांधी जी ने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों के समर्थन में आंदोलन किया। इस आंदोलन में किसानों ने कर न देने का संकल्प लिया और अंततः ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा।

असहयोग आंदोलन (1920-1922)

असहयोग आंदोलन गांधी जी का पहला राष्ट्रव्यापी आंदोलन था, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोग करने का आह्वान किया। इस आंदोलन में लाखों भारतीयों ने ब्रिटिश वस्त्रों का बहिष्कार किया, सरकारी नौकरियों से इस्तीफा दिया, और राष्ट्रीय स्कूल और कॉलेजों की स्थापना की।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)

सविनय अवज्ञा आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश कानूनों का उल्लंघन करना था। इस आंदोलन की शुरुआत दांडी मार्च से हुई, जिसमें गांधी जी ने नमक कर के खिलाफ विरोध जताते हुए नमक बनाया। यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ा जनांदोलन बना।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

भारत छोड़ो आंदोलन गांधी जी का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन था। इसमें गांधी जी ने "करो या मरो" का नारा दिया और भारतीयों से ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह करने का आह्वान किया। इस आंदोलन ने स्वतंत्रता संग्राम को तीव्र गति दी और अंततः 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली।

गांधी जी की विचारधारा

अहिंसा

गांधी जी की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा अहिंसा थी। उनका मानना था कि हिंसा से किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता और सत्य के मार्ग पर चलते हुए अहिंसा से ही विजय प्राप्त की जा सकती है।

सत्याग्रह

सत्याग्रह गांधी जी की दूसरी प्रमुख विचारधारा थी, जिसका अर्थ है 'सत्य के प्रति आग्रह'। सत्याग्रह के माध्यम से उन्होंने अन्याय के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध का मार्ग अपनाया।

स्वदेशी

थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://thati.net/

गांधी जी ने स्वदेशी आंदोलन को प्रोत्साहित किया, जिसमें भारतीय वस्त्रों और उत्पादों का उपयोग और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार शामिल था। उनका मानना था कि स्वदेशी से न केवल आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है, बल्कि आत्मनिर्भरता भी बढ़ाई जा सकती है।

सामाजिक सुधार

गांधी जी ने सामाजिक सुधार के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किए। वे जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, और महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए संघर्षरत रहे। उन्होंने हरिजन आंदोलन के माध्यम से अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ी और महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के लिए भी कार्य किया।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अतुलनीय है। उनके अहिंसात्मक आंदोलन और सत्याग्रह ने न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाई, बल्कि विश्वभर में अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरणा भी दी। गांधी जी की विचारधारा और उनके आंदोलनों ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी और स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन और कार्य आज भी हमें सत्य, अहिंसा, और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

संदर्भ

1. गांधी जी की आत्मकथा "सत्य के प्रयोग"

2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख दस्तावेज

3. चंपारण सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह पर शोध पत्र

4. असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन पर ऐतिहासिक अध्ययन

5. भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख घटनाक्रम

6. गांधी जी की विचारधारा पर लेख और शोध पत्र

7. सामाजिक सुधार और हरिजन आंदोलन पर अध्ययन

8. स्वदेशी आंदोलन और उसके प्रभाव पर शोध

9. गांधी जी के वक्तव्य और उनके द्वारा लिखित पत्र